Contd.....

आरंभिक कला केन्द्र का अस्तित्व
ई० पूर्व प्रथम शताब्दी तक रहा था संभवि
हेखा की खरोष्ठ व द्वितीय शताब्दी परिपक्व
कला का बोध कराती है। प्रारंभिक काल में
मूर्तियों का निर्माण नीले व भूरे रंग के
पत्थर, चट्टानों से किया जाता था संभवि
परिपक्व काल में इन पत्थर चट्टानों
के साथ-साथ प्रेनाइट, चुनापत्थर, मिट्टी
मिश्रित गारा व पलस्तर के प्रयोग द्वारा भी
मूर्तियों का निर्माण देखते हैं। इन मूर्तियों
में मनुष्य का जीवन्त अंकन हो पाता था,
उनके नाक, नक्श तीखे हुआ करते थे और अंग
प्रत्यंग सुडौल अनुपात में।

परिपक्व काल की मूर्ति कला में बुद्ध की
आँखों में सिंक या एकाग्रिक मोड़ दिखता
है। गांधार कला में प्रस्तर मूर्तियों के
अलावा स्तूप व विहारों की दीवारों पर
आरवार मूर्तियां उत्कीर्ण की जाती थीं। जिनमें
अधिकांशतः बोधिसत्व एवं बुद्ध के जीवन से
संबंधित दृश्य अंकित होते थे। उदाहरणार्थ-
तक्षशिला का स्तूप बोधिसत्व की मूर्तियों से सजाया
गया है। यहाँ ये मूर्तियाँ ताखों या आला
बनाकर रखी गयी हैं। शेहरी, बहलोल
आदि स्थानों पर निर्मित स्तूपों में छोटे पत्थरों
के ऊपर बुद्ध, बोधिसत्व तथा उनके जीवन
से संबंधित घटनाएँ उत्कीर्ण हैं। गांधार कला
में हमें कुछ यथार्थ निरपेक्ष चित्रांकन का भी प्रमाण
मिलता है जैसे- शाहजी की ढेरी स्थित स्तूप
से हमें किसी कुमार राजा व उड़ते हंसों के
समूहों का चित्रांकन मिलता है। गांधार कला के
कई अन्य नमूने भी मिले हैं। शाहजी की ढेरी स्तूप
[illegible] का प्रमाण मिला है।

मैं एक कांस्टा अस्थि मंजूषा मिली है
मकबरे विमरान से इसी प्रकार स्त्री की
अस्थि मंजूषा मिली है। दाहिने से दूसरी के
भीतर कई छिद्र पाए हुए है। इसी तरह
हाथी दांत की बनी एक पटिया बेआम
से मिली है जो भांडार कला के विभिन्न
पक्षों को उजागर करता है।